श्री सालासर के हनुमान

वाया लक्ष्मणगढ़ दूरी 90 किमी. है। श्री सालासर बालाजी का मन्दिर अपने चमत्कारी प्रसंगों के कारण सुविख्यात है यहां चेत्र पूर्णिमा व आसोज पूर्णिमा को मेले लगते हैं जहां लाखों श्रृद्धालु भक्तजन दर्शनों का लाभ उठाते हैं। मन्दिर बड़ा ही सुन्दर व विशाल है जहाँ मण्डप के चहुँ ओर परिक्रमा, दुछत्ती व बरामदा बना है। यहाँ पर भक्तों द्वारा अपनी मनोवांछित कामना पूर्ण होने पर उत्तरोत्तर मणि मन्दिर को भव्य रूप प्रदान किया जाता रहा है। मन्दिर के चारों और मुसाफिर भक्तों के ठहरने के लिए पर्याप्त धर्मशालाएं है। मन्दिर के पूर्वी द्वार पर मोहन मन्दिर, मोहन चौक तथा मोहनदास जी का कूप है। साथ लगी धर्मशालाओं को जोड़ने वाले बड़े बड़े बरामदे व गलियारे है इनमें अनेकों सुंदर, धार्मिक व नयनाभिराम चित्र बने हुए हैं। इसके दूसरी और ब्रह्मपुरी तथा सवामणि के निमित्त विशाल भोज्य पदार्थ तैयार करने हेतु विशाल कुंड व रसोवडे (रसोईघर) है। यहां दर्शनीय ऐतिहासिक दो बैलगाडियां, जो आसोटा ग्राम से श्री बालाजी की प्रतिमा व भक्त गणों को लेकर आई थी। वह अब भी मन्दिर प्रांगण में शीशे आवरण में दर्शनार्थ रखी हुई है।

सालासर में श्री हनुमान सेवा समिति द्वारा जनहित में काफी अच्छे व सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं।